एम.ए.(हिंदी एवं भाषा विज्ञान)

नाम : हिंदी एवं भाषाविज्ञान में दो वर्षीय स्नातकोत्तर उपाधि। इस उपाधि का संचालन हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग के अन्तर्गत किया जाएगा।

प्रवेश योग्यता : स्नातक अथवा समकक्ष उपाधि। शास्त्री से इतर उपाधियों के छात्र–छात्राओं को संस्कृत ज्ञान परीक्षा उत्तीर्ण करनी अनिवार्य होगी। अथवा संस्कृत एडऑन कोर्स में प्रवेश लेना होगा।

प्रवेश प्रक्रिया : इस उपाधि में प्रथम वर्ष में स्नातक उपाधि के अंकों की मेरिट के आधार पर प्रवेश।

सीटें : विश्वविद्यालय की अन्य स्नातकोत्तर उपाधियों के समान इस उपाधि में दोनों वर्षों में 40–40 सीटें होंगी।

पाठ्यक्रम पद्धति : सम्पूर्ण पाठ्यक्रम दो वर्ष में पढ़ाया जाएगा, प्रत्येक वर्ष में दो सेमेस्टर होंगे प्रत्येक सेमेस्टर में पांच–पांच प्रश्न पत्र होंगे। सभी प्रश्न पत्र 80–80 अंकों के होंगे। कुल परीक्षा 2000 अंकों की होगी। सभी प्रश्नपत्रों में 20–20 अंक की आन्तरिक मूल्यांकन परीक्षा होगी। प्रथम वर्ष में 55 प्रतिशत से अधिक पाने वाले छात्र–छात्राएं अंतिम सेमेस्टर में लघुशोध कर सकेंगे। अन्य छात्र–छात्राओं को वैकल्पिक प्रश्नपत्र की पढ़ाई करनी होगी। अथवा परियोजना कार्य पूरा करना होगा। दूसरे/चौथे सेमेस्टर में शैक्षिक भ्रमण का आयोजन भी किया जाएगा।

शिक्षण/परीक्षा माध्यम : हिंदी/संस्कृत।

उत्तीर्णांक : विश्वविद्यालय की परीक्षा समिति एवं अकादमिक समिति के निर्णयों के अनुरूप होंगे। हरेक सेमेस्टर में केवल एक प्रश्न पत्र में श्रेणी सुधार/पुनः परीक्षा की अनुमति दी जायेगी। पहले व दूसरे सेमेस्टर की उपर्युक्त परीक्षाएं तीसरे व चौथे सेमेस्टर के साथ होंगी तीसरे व चौथे सेमेस्टर की परीक्षाएं अगले वर्ष प्रथम/द्वितीय सेमेस्टर के साथ सम्पन्न कराई जाएगी।

वार्शिक भाुल्क : विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित किया जाएगा।

परीक्षा : प्रत्येक सेमेस्टर के अन्त में क्रमशः दिसंबर और मई में परीक्षा संपन्न होगी। प्रत्येक प्रश्नपत्र में 80 अंकों की बाह्य और 20 अंकों की आन्तरिक मूल्यांकन परीक्षा होगी। प्रत्येक प्रश्नपत्र में तीन खण्ड होंगे। प्रथम खण्ड में चार में से दो प्रश्नों (2 गुणा 20) और द्वितीय खण्ड में चार में से दो प्रश्नों (2 गुणा 10) के उत्तर देने होंगे। तीसरे खण्ड में सभी पांच प्रश्न अनिवार्य होंगे। प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का होगा।

अवधि : इस उपाधि को पूर्ण करने के लिए अधिकतम समय चार वर्ष होगा।

उपस्थिति : प्रत्येक सेमेस्टर में 75 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य होगी। इसमें विभागाध्यक्ष के स्तर से 05 एवं कुलपति के स्तर से 10 प्रतिशत की छूट प्रदान की जा सकेगी।

भौक्षिक भ्रमण : प्रत्येक सत्र में छात्र–छात्राओं को उनके विषय से संबंधित शैक्षिक एवं अकादमिक स्थानों पर भ्रमण–यात्रा पर ले जाया जाएगा।

[M.A. in Hindi & Linguistics]

पाठ्यक्रम की संक्षिप्त पृष्ठभूमि, व्यावहारिकता एवं उपयोगिता

भाषा और साहित्य मानव जीवन की अनिवार्य सामाजिक वस्तु और व्यावहारिक चेतना है जिसके दो मुख्य आयाम या प्रकार्य है– सौन्दर्यपरक और प्रयोजनपरक । व्यक्ति की सौन्दर्यपरक अनुभूतियों के आलम्बन रूप में भाषा आत्मकेन्द्रित और सर्जनात्मक होती है। भाषा के प्रयोजनपरक आयाम का सम्बन्ध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन–व्यवहार से होता है। जीवन और समाज की विभिन्न आवश्यकताओं और दायित्वों की पूर्ति के लिए विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों (डोमेन) में उपयोग में आज हिंदी की अत्यधिक महत्ता है।

भारतीय संविधान निर्माताओं के मन में एक ऐसी सार्वदेशिक (राष्ट्रीय–अन्तरराष्ट्रीय) हिंदी के विकास की संकल्पना निहित थी जो राष्ट्र के अधिसंख्यक समुदाय के पारस्परिक सम्पर्क–संचार और शैक्षणिक– साहित्यिक–सांस्कृतिक प्रयोजनों के अतिरिक्त अन्य (प्रशासनिक, व्यावसायिक एवं वैधानिक) प्रयोजनों को भी सिद्ध करने में सक्षम हो। इन निर्देशों के अनुरूप विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने नई शिक्षा नीति में शिक्षण को अनुशिक्षण एवं स्वशिक्षण से जोड़ते हुए प्रथम चरण में हिंदी में राष्ट्रीय एकरूपता और रोजगार की संभावना बढ़ाने वाला द्विवर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम तैयार किया। इस समय देश के शताधिक विश्वविद्यालयों और सैकड़ों महाविद्यालयों में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी के पाठ्यक्रम चल रहे है। इसी क्रम में उत्तराखंड संस्कृत विवि में हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग के तहत इस उपाधि को प्रस्तावित किया गया है।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य और विषय–क्षेत्र :

1– विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों में राजभाषा के रूप में प्रयुक्त हिंदी भाषा एवं साहित्य का गहन ज्ञान प्राप्त कराना ।

2– राष्ट्र की सामाजिक–आर्थिक–सांस्कृतिक विकास की आवश्यकताओं को दृष्टिगत संचार माध्यमों के उपयेाग और भाषिक तथा सर्जनात्मक क्षमता सम्पन्न युवावर्ग उपलब्ध कराना।

3– राजभाषा और हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में विभिन्न पदों का दायित्व संभालने की दृष्टि से कार्यात्मक हिंदी और पत्रकारिता की अवधारणाओं, सिद्धान्तों, कर्तव्यों, अधिकारों आदि का सैद्धान्तिक ज्ञान देते हुए व्यावहारिक सामर्थ्य का विकास करना।

4– कला, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, आभियांत्रिकी, वाणिज्य, प्रबन्धन, विधि आदि क्षेत्रों में हिंदी के अनुप्रयोगों में दक्ष कार्यकर्ता, अनुवादक और दुभाषिए तैयार करना।

5– शैली विज्ञान, भाषा एवं कम्प्यूटर अनुप्रयोग, सर्वेक्षण और शोध, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पत्रकारिता आदि अन्य व्यवहार–पक्षों एवं भाषायी कौशलों का विकास कर सरकारी,अर्धसरकारी एवं निजी क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना ।

6– ऐसे युवाओं को तैयार करना जिन्हें हिंदी भाषा के साथ–साथ उसके साहित्य और संवेदनात्मक पक्षों की भी समझ हो।

प्रथम सेमेस्टर

प्रश्नपत्र–1

हिंदी साहित्य का इतिहास

इतिहास–दर्शन और साहित्येतिहास

हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा

हिंदी साहित्य का इतिहास : काल विभाजन, सीमा–निर्धारण

हिंदी साहित्य : आदिकाल की पृष्ठभूमि एवं नामकरण, सिद्ध और नाथ–साहित्य, रासो–काव्य परंपरा, जैन–साहित्य

हिंदी साहित्य के आदिकाल की प्रवृत्तियाँ, काव्यधाराएं, प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएं

पूर्व मध्यकाल (भक्ति काल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक चेतना एवं भक्ति आन्दोलन, विभिन्न काव्यधाराएं तथा उनका वैशिष्ट्य–संत, प्रेमाश्रयी, राम काव्य, कृष्ण काव्य धारा

उत्तरमध्यकाल (रीतिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, काल–सीमा और नामकरण,

रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएं (रीति सिद्ध और रीति मुक्त) प्रवृत्तियां और विशेषताएं, प्रतिनिधि रचनाकार और रचनाएं।

आधुनिक काल की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और प्रवृत्तियां

भारतेंदु युग : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं और साहित्यिक विशेषताएं

द्विवेदी युग : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं और साहित्यिक विशेषताएं

हिंदी में स्वच्छंदतावादी चेतना का विकास

छायावादी काव्य : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं और साहित्यिक विशेषताएं

उत्तरछायावादी काव्य की विविध प्रवृत्तियां– प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, नवगीत, समकालीन कविता। प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं और साहित्यिक विशेषताएं

हिंदी गद्य की प्रमुख विधाओं (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज आदि) का विकास।

प्रश्नपत्र–2

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

व्याख्या एवं विवेचन के लिए निम्नांकित 9 कवियों में से किन्हीं 6 कवियों का अध्ययन किया जाएगा।

1–चंदबरदाई : पृथ्वीराज रासो (पद्मावती समय), सम्पादक हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. नामवर सिंह

2–विद्यापतिः विद्यापति पदावली, सम्पादक रामवृक्ष बेनीपुरी (शुरू के 20 पद)।

3–कबीरः कबीर ग्रंथावली, सम्पादक डॉ. श्यामसुन्दर दास (गुरुदेव कौ अंग, सुमिरन कौ अंग, विरह कौ अंग)।

4–जायसीः पद्मावत, सम्पादक आचार्य रामचंद्र शुक्ल (मानसरोदक खंड एवं नागमती वियोग खंड)।

5–सूरदासः भ्रमरगीत सार, सम्पादक आचार्य रामचंद्र शुक्ल (20 पद) (पद संख्या 50 से 70)।

6–तुलसीदासः रामचरितमानस का उत्तरकाण्ड (गीता प्रेस) (20वें दोहे से अंत तक)।

7–घनानंदः घनानंद कवित्त, सम्पादक आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (शुरू के 15 पद)।

8–बिहारीः बिहारी रत्नाकर, सम्पादक जगन्नाथदास रत्नाकर (शुरू के 30 दोहे)।

9–भूषण : शिवा बावनी (शुरू के 10 छंद)

प्रश्नपत्र–3
आधुनिक हिंदी काव्य

व्याख्या एवं विवेचन के लिए निम्नांकित 9 कवियों में से किन्हीं 6 कवियों का अध्ययन किया जाएगा।

1–मैथिलीशरण गुप्तः साकेत (नवम सर्ग)
2–जयशंकर प्रसादः कामायनी (चिंता, श्रद्धा, आनंद सर्ग)
3–सूर्यकांत त्रिपाठी निरालाः राम की शक्ति पूजा
4–सुमित्रानंदन पन्तः (5 कवितायें) परिवर्तन, नौकाविहार, मौन निमंत्रण,
5–रामधारी सिंह 'दिनकर': कुरुक्षेत्र (छठा अंक)
6–सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय': नदी के द्वीप, असाध्य वीणा
7–गजानन माधव 'मुक्तिबोध': अँधेरे में
8–नागार्जुनः बादल को घिरते देखा, सिन्दूर तिलकि भाल
9–भवानीप्रसाद मिश्र : गीतफरोश

प्रश्नपत्र–4
भाशा विज्ञान : भाशा, ध्वनि विज्ञान एवं रूप विज्ञान

पाठ्यविषय : भाग–1

1 भाषा– अर्थ एवं विकास, परिभाषा, भाषा के विविध रूप
भाषा–व्यवस्था और भाषा–व्यवहार : भाषा की संरचनात्मक और प्रकार्यात्मक संकल्पना, भाषा–प्रकार्य, अभिलक्षण, भाषा और बोली, प्रयुक्ति की संकल्पना, भाषा–व्यवहार के संदर्भ और भाषा–विकल्पन ।
2 भाषा विज्ञान का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र, अध्ययन पद्धतियां
3 भाषा विज्ञान का अन्य विषयों से संबंध
4 भाषा की प्रकृति और मानव–भाषा की विशेषताएं
5 संसार की भाषाओं का वर्गीकरण
–पारिवारिक वर्गीकरण एवं आकृतिमूलक वर्गीकरण की विशेषताएं
6 संसार के प्रमुख भाषा परिवार, भारोपीय परिवार का अध्ययन

पाठ्यविषय : भाग–2

1 ध्वनि का अर्थ एवं परिभाषा
2 स्वन एवं स्वनिम का अर्थ, महत्व
3 ध्वनियों का वर्गीकरण
4 ध्वनि गुण–मात्रा, आघात, स्वराघात। अल्पप्राण–महाप्राण, घोष–अघोष
5 ध्वनि परिवर्तन के कारण एवं दिशाएं
6 ध्वनि नियम–ग्रिम नियम, ग्रेसमैन नियम, वर्नर नियम
7 हिंदी स्वनिम : स्वर, व्यजंन

पाठ्यविषय : भाग–3

1 रूप–परिभाषा, स्वरूप एवं प्रकार

2 रूप–तात्विक विवेचन
3 रूप–विश्लेषण

प्रश्नपत्र–5
काव्यशास्त्र

पाठ्यविषय : भाग–1

पाश्चात्य काव्यशास्त्र एवं चिंतक
साहित्यशास्त्र की पाश्चात्य अवधारणा
प्रमुख चिंतक एवं उनके सिद्धांत
प्लेटो : काव्य सिद्धांत
अरस्तु : अनुकरण सिद्धांत एवं त्रासदी विवेचन
लौंजाइनस : उदात्त की अवधारणा
क्रौंचे : अभिव्यंजनावाद
वड्सवर्थ : काव्य भाषा का सिद्धांत

पाठ्यविषय : भाग–2

1 संस्कृत काव्य शास्त्र के सिद्धांत, काव्य लक्षण, काव्य–हेतु, काव्य–प्रयोजन, काव्य के प्रकार
2 काव्य भाषा और सामान्य भाषा में अंतर, काव्य भाषा की प्रक्रियाएं, चयन, समानांतरता, प्रतीकात्मकता, बिंबात्मकता
3 काव्य–सिंद्धांत, काव्य की आत्मा
4 रस, अलंकार, वक्रोक्ति, ध्वनि, रीति एवं औचित्य सिद्धांत

द्वितीय सेमेस्टर

प्रश्नपत्र–1

आधुनिक गद्य साहित्य

व्याख्या एवं विवेचन के लिए निर्धारित पुस्तकें–

1–आषाढ़ का एक दिन (मोहन राकेश)
2–बाणभट्ट की आत्मकथा (आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी)
5–निबंध संकलनः निम्नलिखित 09 निबंधकारों में से किन्हीं छह निबंधकारों के चयनित निबंधों का अध्ययन– बालकृष्ण भट्ट, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, रामवृक्ष बेनीपुरी, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, डॉ. रामविलास शर्मा, विद्या निवास मिश्र, कुबेरनाथ राय।
6–कहानीः निम्नलिखित छह कहानियों का अध्ययन।
शतरंज के खिलाड़ी– प्रेमचंद, नीली झील– कमलेश्वर, वापसी– उषा प्रियंवदा, दोपहर का भोज– अमरकांत, टूटन– राजेन्द्र यादव, दो दुखों का एक सुख– शैलेश मटियानी

प्रश्नपत्र–2

साहित्यालोचन

भारतीय काव्यशास्त्र और हिंदी आलोचना के उदय की परस्थितियां,
प्रारम्भिक हिंदी आलोचना का स्वरूप,
पाश्चात्य साहित्यालोचन और हिंदी आलोचना,
हिंदी आलोचना का ऐतिहासिक क्रम–विकास,
शुक्लपूर्व हिंदी आलोचना, आचार्य रामचंद्र शुक्ल : सैद्धांतिक चिंतन एवं व्यावहारिक पक्ष,
शुक्लोत्तर हिंदी– आलोचना, स्वातन्त्रयोत्तर हिंदी आलोचना.
हिंदी के प्रमुख आलोचकों की आलोचनात्मक अवधारणाओं और पद्धतियों–प्रतिमानों का उनकी कृतियों के आलोक में अध्ययन।
हिंदी आलोचना की विविध प्रणालियाँः काव्यशास्त्रीय, स्वच्छंदतावादी, मार्क्सवादी, मनोविश्लेषणवादी, व्यक्तिवादी, सौन्दर्यशास्त्रीय, प्रभाववादी, समाजशास्त्रीय, संरचनावादी, शैलीवैज्ञानिक, तुलनात्मक आलोचना।
आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ : संरचनावाद, विखंडनवाद, उत्तर–आधुनिकता

व्याख्या एवं आलोचना हेतु निर्धारित ग्रन्थ–

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी : कबीर
डॉ. रामविलास शर्मा : भाषा और समाज

प्रश्नपत्र–3
अर्थ विज्ञान एवं वाक्य विज्ञान

पाठ्यविषय : भाग–1

1 शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ–प्रतीति, अर्थ–बोध के साधन
2 अर्थ परिवर्तन की दिशाएं, अर्थ परिवर्तन के कारण
3 पर्याय विज्ञान–पर्यायों के विकास के कारण
4 अनेकार्थता और विलोमता, समानार्थी
5 बौद्धिक नियम
6 शब्द शक्तियां–अभिप्राय और उनकी महत्ता
7 अर्थ–तत्व एवं संबंध–तत्व का महत्व
8 शब्द की परिभाषा एवं शब्दों का वर्गीकरण– 1 व्याकरण 2 उद्गम 3 रचना 4 अर्थ के आधार पर

पाठ्यविषय : भाग–2

1 वाक्य की परिभाषा एवं महत्व
2 वाक्यों के प्रकार
3 वाक्य संरचना
4 निकटस्थ अवयव

प्रश्नपत्र–4
भौली विज्ञान

पाठ्यविषय : भाग–1

1 शैली– अर्थ, परिभाषा, विभाषा और शैली, प्रयुक्ति और शैली
2 शैली विज्ञान : सामान्य परिचय, अध्ययन क्षेत्र
3 शैली विज्ञान : विविध प्रकार, भाषा वैज्ञानिक एवं साहित्यिक शैली विज्ञान
4 गद्य संरचना शैली वैज्ञानिक विवेचन
5 शैली – उपयोगिता एवं आवश्यकता
6 संकेत विज्ञान – संकेत और प्रतीक, संकेतार्थ, संकेत और संस्कृति
7 तुलनात्मक शैली विज्ञान

प्रश्नपत्र–5
भाशा प्रौद्योगिकी एवं कंप्यूटेशनल भाशाविज्ञान

पाठ्यविषय : भाग–1

1 भाषा प्रौद्योगिकी–अवाधारणा, भाषा के तकनीकी पहलू
2 भाषा प्रौद्योगिकी–उद्भव
3 भाषा प्रौद्योगिकी–प्रकार एवं विवेचन, विविध आयाम
4 भाषा प्रौद्योगिकी–वर्तमान स्थिति एवं संभावनाएं
5 भाषा इंजीनियरिंगः अभियांत्रिकी
6 कार्पस भाषा विज्ञान–परिभाषा, प्रकार, उपयोग

पाठ्यविषय : भाग–2

1 कंप्यूटेशनल भाषा विज्ञान – मौलिक अवधारणाएं, सर्वेक्षण और उपलब्ध सामग्री परिचय
2 संस्कृत, हिंदी छात्रों के लिए कंप्यूटर का व्याकरण एवं कंप्यूटर का उपयोग
3 संस्कृत व हिंदी के लिए कंप्यूटर का उपयोग Lexical resource विश्लेषक उपकरण OCR, Digitalization, e-शिक्षा आदि
4 इंटनेट–सर्च इंजन, वेब डिजाइन, ब्राउजर, मेल, टेलनेट

अथवा

प्रश्नपत्र–5
कोश विज्ञान एवं लिपि विज्ञान

पाठ्यविषय : भाग–1

1 कोश : परिभाषा, स्वरूप, महत्व । कोश और व्याकरण । कोश के भेद ।
कोश – निर्माण की प्रक्रिया : सामग्री संकलन, प्रविष्टिक्रम, व्याकरणिक कोटि, उच्चारण, व्युत्पत्ति, अर्थ (पर्याय, व्याख्या, चित्र) प्रयोग, उपप्रविष्टियाँ, संक्षिप्तियां, संदर्भ और प्रतिसंदर्भ।
2 प्रविष्टि संरचना, रूपिम, शब्द और शब्दिम, सरल, व्युत्पन्न और सामासिक, सामासिक शब्दिम, सहप्रयोगात्मक, व्युत्पादक समास, सहप्रयोग और संदर्भ ।
3 रूप–अर्थ सम्बन्ध : अनेकार्थकता, समानार्थकता, समध्वन्यात्मकता, विलोमता। कोश निर्माण की दिक्कतें
4 हिंदी कोश साहित्य का संक्षिप्त इतिहास । स्वचालित सामग्री संसाधन, कम्प्यूटर और कोश निर्माण : संक्षिप्त परिचय ।

पाठ्यविषय : भाग–2

1 लिपि की उत्पत्ति–विकास एवं महत्व
2 लिपि के विकास क्रम की अवधाराणाएं
3 भारतीय लिपियां–सिंधु घाटी की लिपि, खरोष्ठी, ब्राह्मी, देवनागरी
4 द्रविड़ परिवार की भाषाएं एवं उनकी लिपियां
5 लिपि की उपयोगिता
6 देवनागरी लिपि का विकास, देवनागरी लिपि के गुण और दोष
7 लिपि में सुधार हेतु प्रयास
8 लिपि और कंप्यूटर अनुप्रयोग

नोट – तीसरे सेमेस्टर में चौथे और पांचवें प्रश्नपत्र में अनुवाद और पत्रकारिता का विकल्प दिया गया है। जो छात्र–छात्राएं चौथे प्रश्नत्र के तौर पर अनुवाद का विकल्प चुनेंगे, उन्हें पांचवें प्रश्नपत्र के तौर पर भी अनुवाद का ही अध्ययन करना होगा। यही नियम पत्रकारिता के प्रश्नपत्रों पर भी लागू होगा।

तृतीय सेमेस्टर

प्रश्नपत्र–1

हिंदी का भाशिक स्वरूप और संचार भाशा

पाठ्यविषय : भाग–1

हिंदी का भाशिक स्वरूप

हिंदी का विकास : प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ–वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएं। मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ– पाली, प्राकृत और अपभ्रंश। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण, ग्रियर्सन के अनुसार वर्गीकरण।

हिंदी की उप भाषाएँ– पश्चिमी हिंदी, पूर्वी हिंदी तथा उनकी बोलियां

हिंदी के विविध रूप : संपर्क–भाषा, राष्ट्र भाषा, राजभाषा के रूप में हिंदी, माध्यम–भाषा, संचार–भाषा

1–प्रयोजनमूलक भाषा और प्रयुक्ति : संकल्पना; निर्धारक तत्त्व और महत्व।

प्रयोजनमूलक हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियाँ और प्रमुख व्यवहार–क्षेत्र :

क– कार्यालयी/प्रशासनिक हिंदी, (ख) वित्त और वाणिज्य क्षेत्र में हिंदी, (ग) विज्ञान, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी में हिंदी, (घ) जनसंचार माध्यमों में हिंदी, (ङ) विज्ञापन में हिंदी, (च) कम्प्यूटर क्षेत्र में हिंदी, (छ) सर्जनात्मक हिंदी ।

पाठ्यविषय : भाग–2

विभिन्न संचार माध्यम और हिंदी भाषा :

1–संचार माध्यम –श्रव्य, दृश्य, श्रव्य–दृश्य।

2–भाषा और समाज का अंतर्सम्बन्ध, संचार–प्रक्रिया में हिंदी भाषा का महत्व ।

3–संचार भाषा के रूप में हिंदी।

भाषा द्वैत और द्विभाषिकता, कोड मिश्रण और कोड परिवर्तन, भाषा नियोजन एवं प्रबंधन : हिंदी के विशेष संदर्भ में।

4–मानक भाषा और हिंदी का मानकीकरण

5–विभिन्न संचार माध्यमों में हिंदी भाषा–प्रयोग; माध्यम भेद और भाषिक वैशिष्ट्य। भूमण्डलीकरण और संचार–क्रान्ति के परिप्रेक्ष्य में हिंदी का भविष्य ।

प्रश्नपत्र–2
राजभाषा हिंदी

पाठ्य विषय :

1. प्रशासन–व्यवस्था और भाषा । राजभाषा (प्रशासनिक/कार्यालयी हिंदी) की प्रकृति।
   राजभाषा विषयक सांविधानिक प्रावधान : राजभाषा प्रावधान (अनुच्छेद 343 से 351 तक); राष्ट्रपति के आदेश (1952, 1955, 1961.); राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथासंशोधित 1967); राजभाषा संकल्प, 1968 (यथानुमोदित 1991); राजभाषा नियम, 1976 ।
2. **राजभाषा का अनुप्रयोगात्मक पक्ष** : टिप्पण, प्रारूपण, संक्षेपण, प्रतिवेदन ।
   टिप्पण (टिप्पणी) : लेखन के उद्देश्य, संचिका (पत्रावली / फाइल), लेखन–प्रक्रिया एवं मुख्य अंग, प्रकार।
3. **प्रारूपण** (मसौदा लेखन) : स्वरूप, लेखन के उद्देश्य, पत्राचार, शब्दावली और भाषा–शैली ।
   प्रशासनिक पत्राचार : सैद्धान्तिक संदर्भ और ध्यातव्य बातें। प्रमुख प्रकार और प्रयोग–क्षेत्र : पत्र, स्मरण पत्र, अंतरिम उत्तर, पावती; अर्धसरकारी पत्र, कार्यालय आदेश, आदेश; कार्यालय ज्ञापन, ज्ञापन; परिपत्र; पृष्ठांकन; गजट, अधिसूचना, संकल्प; आवेदन पत्र, अभ्यावेदन, निविदा सूचना, सार्वजनिक सूचना, अंतरविभागीय टिप्पणी
4. **संक्षेपण** : संक्षेपण और सार लेखन, संक्षेपण के प्रकार : निरन्तर वृद्धि से संक्षेपण, सारणीबद्ध संक्षेपण । विशेषताएँ, उपयोग और महत्वपूर्ण बिन्दु ।
   प्रतिवेदन : सरकारी बैठकें; नियोजन, आयोजन और संयोजन पक्ष; कार्यसूची और कार्यवृत्त, प्रतिवेदन लेखन का उद्देश्य, प्रकार, ध्यातव्य बिन्दु ।
5. हिंदी संकेताक्षर और कूटपद निर्माण। प्रशासनिक शब्दावली।

प्रश्नपत्र–3
हिंदी व्याकरण का तात्विक विवेचन

पाठ्यविषय : भाग–1

1 भारतीय व्याकरण की परंपरा–
–संस्कृत की व्याकरण परंपरा,
–हिंदी की व्याकरण परंपरा
2 प्रमुख वैयाकरण एवं उनके ग्रंथ
3 पाणिनी, पंतजलि, यास्क, हेमचंद्र का व्याकरणिक महत्व
4 हिंदी वैयाकरण पंडित कामताप्रसाद गुरु, सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, आचार्य किशोरीदास वाजपेयी की देन

प्रश्नपत्र–4
हिंदी पत्रकारिता

पाठ्य विषय : भाग–1

ऐतिहासिक पत्रकारिता

1– भारतीय नवजागरण : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य। मीडिया तकनीकी का प्रसार और यूरोपीयों की पत्रकारिता। भाषायी और हिंदी पत्रकारिता का उदय एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण में भूमिका ।

हिंदी पत्रकारिता का विकास और भारतेन्दु युग : विचारधारा, भाषा एवं पत्रकारिता के स्वरूप के समेकन का युग। प्रेस नियंत्रण एवं पुस्तक पंजीकरण संबंधी 1823ए 1835ए 1857ए 1867ए 1878 ई. के अधिनियम एवं अन्य प्रतिबन्ध।

मालवीय, तिलक और द्विवेदीयुगीन पत्रकारिता : युगीन प्रवृत्तियां, विचारधारात्मक संघर्ष और भाषायी अभिलक्षण ।

2– **गाँधीयुगीन हिंदी पत्रकारिता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ** । शासन का शिकंजा और क्रान्तिकारी पत्रकारिता । भारतीय मुक्ति संग्राम में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका । शासकीय गुप्त बात अधिनियम (1923) एवं अन्य प्रतिबन्ध।

पाठ्य विषय : भाग–2

स्वातंयोत्तर हिंदी पत्रकारिता और प्रेस–विधि :

1– भारतीय संविधान में मूल अधिकार और कर्तव्य । पत्रकारिता के क्षेत्र में व्यावसायिक पूंजी का प्रवेश और प्रतिष्ठानी पत्र–पत्रिकाओं (मीडिया घरानों) का उत्तरोत्तर विकास । प्रमुख प्रवृत्तियां ।

2– आर्थिक उदारीकरण और सूचना–क्रान्ति का भारतीय परिदृश्य : प्रेस स्वतंत्रता : सूचना प्राप्ति और सम्प्रेषण का अधिकार।

3– सूचना तकनीकी और प्रौद्योगिकी के आधुनिकीकरण का दौर और दबाव । स्वतंत्र भारत में हिंदी पत्रकारिता के समक्ष चुनौतियां और नए दायित्व । इंटरनेट पत्रकारिता के विकास का संक्षिप्त परिचय । प्रतिलिप्यधिकार

4– द्वितीय प्रेस आयोग : स्थापना के उद्देश्य, संस्तुतियां एवं कार्रवाई । प्रेस परिषद अधिनियम, 1978 ।

प्रेस और जनसंचार के संदर्भ में अश्लीलता, अपमान लेख अथवा प्रस्तुतीकरण, मानहानि, स्त्री–गरिमा । श्रमजीवी पत्रकार, बालश्रम, पर्यावरण और मानवाधिकार से सम्बन्धित कानून ।

5– पत्रकारों के लिए आचार–संहिता

अथवा

प्रश्नपत्र–4

अनुवाद : सिद्धान्त एवं अनुप्रयोग–।

पाठ्यविषय : भाग–1

अनुवाद के आयाम : अनुवाद की महत्ता, स्वरुप एवं अर्थ, प्रकृति एवं सीमाएं

1 अनुवाद का संरचात्मक पहलू

2 व्यतिरेकी अध्ययन : अ– व्यतिरेकी विश्लेषण, ब– व्यतिरेकी भाषा विज्ञान

3 उक्ति, प्रोक्ति, सूक्ति, अन्योक्ति, समासोक्ति

4 अनुवाद की विचारधाराएं : प्राचीनकाल से लेकर उत्तर आधुनिक तक

5 भाषा विज्ञान और अनुवाद का शास्त्र

6 अनुवाद का व्यावहारिक पक्ष, अनुवाद का उत्तर अनुवाद

पाठ्यविषय : भाग–2

1– हिंदी में अनुवाद की परंपरा, अनुवाद की उपयोगिता

2– अनुवाद–प्रक्रिया : पाठ–पठन, विश्लेषण, अंतरण और पुनर्गठन। नाइडा, न्यूमार्क और बाथगेट के प्रारूप। अनुवादक की भूमिका के विभिन्न पक्ष और योग्यताएँ। अनुवाद और समतुल्यता का सिद्धान्त।

3– स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा।

4– पारिभाषिक शब्दावली, शीर्षक, लाक्षणिक प्रयोग, मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ, आंचलिक भाषाप्रयोग, पदनाम एवं संक्षिप्ताक्षर : हिंदी अनुवाद का संदर्भ ।

प्रश्नपत्र–5

हिंदी की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पत्रकारिता

पाठ्यविषय : भाग–1

1– साहित्यिक पत्रकारिता : अर्थ, अवधारणा और महत्व । हिंदी नवजागरण और साहित्यिक पत्रकारिता : स्वरूप और विकास ।
भारतेन्दुयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय और प्रवृत्तियां । द्विवेदीयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय और प्रवृत्तियां ।

2– प्रेमचंद और छायावादयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय और प्रवृत्तियां प्रेमचंदोत्तर साहित्यिक पत्रकारिता : असहयोग और क्रान्तिकारी आन्दोलन के संदर्भ ।

3– स्वत्रंतता के बाद की साहित्यिक पत्रकारिता (1950 से वर्तमान तक) : परिचय और प्रवृत्तियां समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय और प्रवृत्तियां

4– साहित्यिक पत्रकारिता : भाषा के प्रतिमान, हिंदी–हिन्दुस्तानी विवाद, अँग्रेजी हटाओ आन्दोलन । साहित्यिक पत्रकारिता : स्त्री, दलित, मानवाधिकार एवं अन्य सामयिक मुद्दे । साहित्यिक समाचार, साहित्यिक गोष्ठी / संगोष्ठी / सम्मेलन / अधिवेशन आदि की रपट । फीचर, साक्षात्कार, परिचर्चा, आदि । पुस्तक–समीक्षा ।

5– दैनिक पत्रों के साहित्यिक परिशिष्टों का सम्पादन, साहित्यिक स्तम्भों का निर्धारण, साहित्यिक पत्रिकाओं के सामान्य और विशिष्ट अंकों का सम्पादन : सिद्धान्त और व्यवहार ।

पाठ्यविषय : भाग–2

1– सांस्कृतिक पत्रकारिता : अवधारणा, अर्थ और महत्व । परम्परागत, आधुनिक और उत्तर आधुनिक समाज । संस्कृति, लोकसंस्कृति, लोकप्रिय संस्कृति, अपसंस्कृति। बाजार, संस्कृति और

संचार माध्यम । मौखिक और दृश्य संचार : परम्परागत रूप, शैली और प्रौद्योगिकी के साथ समन्वित उपयोग ।

2– सांस्कृतिक संवाद : अर्थ, भेद और विशेषताएँ । सांस्कृतिक संवाददाता की योग्यताएँ : आस्वादन, अन्वीक्षण, कल्पनाशीलता आदि । सांस्कृतिक संवाद के क्षेत्रों का परिचय – मंचकला, पर्यटन, पुरातत्व, संग्रहालय आदि ।

3– छायाचित्र (फोटोग्राफी) और चित्र पत्रकारिता : जनसंचार माध्यम के रूप में छायाचित्र, छायाचित्र लेने के तरीके, उपकरण और प्रयोग की विधि । चित्र पत्रकारिता : सिद्धान्त और व्यवहार, चित्र सम्पादन, सचित्र रूपक (फीचर), प्रदर्शनी एवं कार्टून।

अथवा

प्रश्नपत्र–5

अनुवाद : सिद्धान्त एवं अनुप्रयोग–।।

पाठ्यविषय : भाग–1

1 अनुवाद – समस्या एवं परीक्षण, समाधान

2 अनुवाद – अनुप्रयोगात्मक पक्ष

– वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद

– साहित्यिक– सांस्कृतिक अनुवाद

– मानविकी एवं समाज विज्ञान अनुवाद

– कार्यालयी एवं प्रशासनिक अनुवाद

– मीडिया के लिए अनुवाद

3 तकनीकी अनुवाद

– परिचय एवं इतिहास

– व्याकरणिक ढांचा

– अनुवाद की समस्याएं

पाठ्यविषय : भाग–2

1– **अनुवाद के प्रकार** : माध्यम, प्रक्रिया और पाठ के आधार पर,आशु अनुवाद एवं दुभाषिया प्रविधि ।

2– **अनुवाद–सामग्री के प्रकार और अनुवाद की समस्याएँ** : सर्जनात्मक साहित्य, मानविकी एवं तकनीकी साहित्य, विधि साहित्य, कार्यालयी सामग्री, बैंकिंग शब्दावली, मीडिया एवं विज्ञापन क्षेत्र

3– उपर्युक्त क्षेत्रों के अनुवाद में आने वाली समस्याओं का समाधान।

4– अनुवाद : पुनरीक्षण, सम्पादन, मूल्यांकन । अनुवाद का उत्तर अनुवाद

5– मशीनी अनुवाद : संभावनाएँ और सीमाएँ ।

चतुर्थ सेमेस्टर

प्रश्नपत्र–1
सर्जनात्मक लेखन

पाठ्यविषय :

1. **रिपोर्ताज** (फीचर / रूपक) : अर्थ, स्वरूप, रिपोर्ताज एवं अन्य गद्य रूप, रिपोर्ताज और फीचर, लेखन–प्रविधि, महत्व ।
   फीचर लेखन : विषय–चयन, सामग्री–निर्धारण, लेखन–प्रविधि । सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, विज्ञान, पर्यावरण, खेलकूद से सम्बद्ध विषयों पर फीचर लेखन ।
2. **साक्षात्कार** (इण्टरव्यू / भेंटवार्ता) : उद्देश्य, प्रकार, साक्षात्कार–प्रविधि, महत्व ।
   स्तंभ लेखन : समाचार पत्र के विविध स्तंभ, स्तंभ लेखन की विशेषताएं, समाचार पत्र और सावधिक पत्रिकाओं के लिए समसामयिक, ज्ञानवर्धक और मनोरंजक सामग्री का लेखन ।
3. **दृश्य–सामग्री** (छायाचित्र, कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स आदि) से सम्बन्धित लेखन ।
   पार्श्वदृश्य (प्रोफाइल) लेखन । स्वतंत्र (फ्रीलांस) और प्रकाशन संघ (सिंडिकेट) लेखन ।
4. बाजार, खेलकूद, फिल्म, पुस्तक और कला समीक्षा ।
   आर्थिक पत्रकारिता, खेल पत्रकारिता, ग्रामीण और विकास पत्रकारिता, फोटो पत्रकारिता ।

अथवा

प्रश्नपत्र–1
भारतीय साहित्य

पाठ्यविषय :भाग–1

भारतीय साहित्य का स्वरूप
भारतीय साहित्य के अध्ययन की चुनौतियां
हिंदी साहित्य में भारतीयता के मूल्य

पाठ्यविषय :भाग–2

निम्नलिखित कृतियों का अध्ययन किया जाएगा
हयवदन, गिरीश कर्नाड, कन्नड नाटक
मृत्युंजय, वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य, असमिया उपन्यास
बीच का रास्ता नहीं होता, पाश, पंजाबी काव्य

प्रश्नपत्र–2
हिंदी एवं कम्प्यूटर अनुप्रयोग

पाठ्यविषय

1– **सूचना प्रौद्योगिकी** : संक्षिप्त परिचय, प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में सूचना तकनीकी का क्रमिक विकास एवं प्रसार, पेपर रहित पत्रकारिता – सी.डी. मैगजीन के विकास तक ।

कम्प्यूटर : संक्षिप्त परिचय, विशिष्टताएँ, प्रकार, संरचना – आंतरिक और बाह्य यंत्र, भाषिक समझ, भाषाएँ, स्मृति, सूचना संग्रहण क्षमता, गति एवं संग्रहण पैमाना, स्कैनर, डिजिटल, प्रिंटर, माउस, वेब कैमरा, मॉडेम, डाटा रिकार्ड स्ट्रक्चर । पारिभाषिक शब्दावली।

2– **मल्टी मीडिया** : परिचय एवं कार्य प्रणाली ।

कम्प्यूटर की कार्यप्रणाली : प्रबन्धन – हार्डवेयर, सॉफटवेयर, ह्यूमेनवेयर।

सॉफ्टवेयर की श्रेणियाँ : ऑपरेटिंग सिस्टम सॉफ्टवेयर, एप्लीकेशन पैकेज, भाषा अनुवादक, यूटिलिटी प्रोग्राम, एप्लीकेशन प्रोग्राम ।

3– **सिस्टम सॉफ्टवेयर** : कार्यप्रणाली, प्रयोग, सावधानियाँ । कम्प्यूटर आपरेटिंग सिस्टम लोड करना, सिस्टम से सम्बन्धित जटिलताएँ, नए प्रोग्राम को सी. डी. द्वारा कम्प्यूटर में लोड करना, हिंदी फॉन्ट लोड करना।

4– **ऑपरेटिंग सिस्टम** : परिचय, डॉस, विंडोज, यूनिक्स, जावा आदि । स्वयं के कार्य हेतु देशी एवं अन्तरराष्ट्रीय प्रोग्राम, उपयोक्ता (कस्टमाइज) प्रोग्राम का संचालन एवं नियंत्रण, स्वर अभिज्ञान (वॉयस रेकग्निशन) । (उपर्युक्त सभी का संक्षिप्त परिचय)।

5– **एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर** : प्रयोक्ता के सामान्य कार्य निष्पादन हेतु प्रोग्राम । **विशिष्ट प्रोग्राम** : पेजमेकर, क्वार्क एक्सप्रेस, फोटोशॉप, कोरल ड्रा, डिजाइनर (संक्षिप्त परिचय)।

6– **इंटरनेट** : परिचय, स्वरूप, कार्य प्रणाली, इलेक्ट्रॉनिक डाटा इन्टरचेंज, ई–मेल तैयार करना और भेजना ।

प्रश्नपत्र–3
विशेश अध्ययन

नोट : निम्नलिखित में से किसी एक कवि अथवा गद्यकार के कृतित्व का विशिश्ट अध्ययन किया जाएगा। इसके अंतर्गत संबंधित रचनकार की सभी रचनाएं सम्मिलित होंगी।

कवि : कबीर, जयशंकर प्रसाद, मुक्तिबोध

गद्यकार : प्रेमचंद, मोहन राकेश, भीष्म साहनी

प्रश्नपत्र–4
शोध–प्रविधि

पाठ्यविषय :

1– शोध : अवधारणा, परिभाषा, स्वरूप, तत्त्व, शोध और संचार सिद्धान्त, भूमिका, प्रकार्य, क्षेत्र और महत्व। शोध के प्रकार। भाषा शोध।

2– शोध–प्रविधि : सर्वेक्षण, सामग्री विश्लेषण, केस स्टडी, समूह चर्चा, पैनल चर्चा, द्वितीयक आंकड़ों का विश्लेषण, प्रलेख आधारित शोध और पुस्तकालय शोध ।

3– साक्षात्कार अनुसूची और प्रश्नावली – उपयोग, लाभ, समस्याएं और इनकी तुलना । साक्षात्कार–अनुसूची और प्रश्नावली की रचना । साक्षात्कार की कला और ध्यातव्य बातें ।

4– आधार सामग्री संसाधन – संपादन, संवर्ग निर्माण, संकेतीकरण और सारणीकरण । विश्लेषण, व्याख्या और इतिवृत्त लेखन।

5– शोध प्रतिवेदन, परियोजना प्रतिवेदन

6– हिंदी शोध : नैतिक परिदृश्य ।

प्रश्नपत्र–5
लघु शोधप्रबन्ध

भाग–1 लघु शोध प्रबन्ध – 80 अंक

भाग–2 मौखिकी – 20 अंक

निर्देश :

1– लघुशोध के विषय के बारे में चतुर्थ सत्रारंभ के समय विभागाध्यक्ष और पाठ्यक्रम समन्वयक इस बारे में निर्णय लेंगे । छात्र को विभाग द्वारा प्रदत्त विषय पर निर्धारित प्राध्यापक के निर्देशन में अनुसंधान–प्रविधि का उपयोग करते हुए शोधकार्य करना होगा। अनुमानतः 50 पृष्ठों में टंकित लघु शोध प्रबन्ध **दो प्रतियों** में छात्र/छात्रा को सत्रांत परीक्षा प्रारम्भ होने के कम–से–कम दो सप्ताह पूर्व विभाग में मूल्यांकनार्थ प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा।

अथवा

परियोजना–कार्य

(क) निम्नलिखित में परियोजना कार्य : (20 गुणा 4) = 80 अंक

(प) विभाग द्वारा निर्दिष्ट पुस्तक अथवा फिल्म की 5/6 पृष्ठ में समीक्षा।

(पप) इण्टरनेट : Blog का निर्माण एवं लेखन।

(पपप) स्वीकृत विषय पर फोटो/कार्टून फीचर अथवा फीचर–लेखन।

(पअ) किसी एक साहित्यिक/सांस्कृतिक पत्रिका अथवा कार्यक्रम पर समीक्षात्मक रिपोर्ट।

(ख) मौखिकी : = 20 अंक

विस्तृत अध्ययन के लिए अनुशंसित ग्रंथ :

संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।
लालित्य तत्व – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
चित्रकला का रसास्वादन – रामचन्द्र शुक्ल, किताब महल, मेरठ ।
लोकसंस्कृति : आयाम और परिप्रेक्ष्य – सं. महावीर अग्रवाल, श्री प्रकाशन, दुर्ग (म.प्र.) ।
नाट्यशास्त्र का पारिभाषिक संदर्भ–कोश – डॉ. ब्रजवल्लभ मिश्र, सिद्धार्थ पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली ।
भाषा और संस्कृति – डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ।
दर्शन–प्रदर्शन – देवेन्द्र राज अंकुर, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली ।
भारतीय सिनेमा का अन्तःकरण – विनोद दास, मेधा बुक्स, दिल्ली ।
पारिभाषिक कला–कोश – रूपनारायण बाथम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
लोकतंत्र के सात अध्याय – सं. अभय कुमार दुबे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
संस्कृति का व्याकरण – नन्दकिशोर आचार्य, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर ।
लेखक का दायित्व – अज्ञेय, वागदेवी प्रकाशन, बीकानेर ।
सांस्कृतिक पत्रकारिता – डॉ. टी. डी. एस. आलोक, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला ।
रंगदर्शन – नेमिचन्द्र जैन, राधाकृष्ण, नई दिल्ली ।
समकालीन भारत – बिपिन चंद्र, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली ।
हिंदी पत्रकारिता – डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
हिंदी पत्रकारिता के इतिहास की भूमिका – जगदीश्वर चतुर्वेदी, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
पत्रिका सम्पादन कला – डॉ. रामचन्द्र तिवारी, आलेख प्रकाशन, दिल्ली ।
राष्ट्रीय जागरण और हिंदी पत्रकारिता का आदिकाल – सुजाता राय, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
लघु पत्रिकाएं और साहित्यिक पत्रकारिता – डॉ. धर्मेन्द्र गुप्त, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली ।
हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
राष्ट्रीय नवजागरण और साहित्य – वीर भारत तलवार, हिमाचल पुस्तक भण्डार, दिल्ली ।
सरस्वती और राष्ट्रीय जागरण – डॉ. हर प्रकाश गौड़ नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ।
स्वतंत्रता आन्दोलन और हिंदी पत्रकारिता – डॉ. अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।
हिंदी की राष्ट्रीय काव्यधारा – डॉ. लक्ष्मीनारायण दुबे, विन्ध्याचल प्रकाशन, सागर ।
गणेश शंकर विद्यार्थी और हिंदी पत्रकारिता – शम्भुनाथ, यशराज प्रकाशन, कोलकाता ।
हिंदी के प्रयुक्तिपरक आयाम – सं. सुरेश कुमार, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ।
प्रयोजनमूलक हिंदी –सं. डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ।
प्रयोजनमूलक हिंदी – विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धान्त और प्रयोग – दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
हिंदी भाषा की संरचना – डॉ. भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
मानक हिंदी का शुद्धिपरक व्याकरण – डॉ. रमेश चन्द्र मल्होत्रा, वाणी प्रकाशन।
व्यावसायिक हिंदी – डॉ. दिलीप सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ।
भाषाविज्ञान की भूमिका – आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा, राधाकृष्ण, नई दिल्ली ।
हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण – डॉ. सूरज भान सिंह, साहित्य सहकार, दिल्ली ।
हिंदी भाषा – डॉ. हरदेव बाहरी, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद ।
पारिभषिक शब्दावली : कुछ समस्याएँ, डॉ. भोलानाथ तिवारी , शब्दकार, दिल्ली ।

सम्पर्क भाषा हिंदी –सं. सुरेश कुमार एवं ठाकुर दास, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ।
बैंकिंग हिंदी पाठ्यक्रम – सं. कृष्ण कुमार गोस्वामी, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ।
भाषा (पत्रिका – नव., दिस., 2001 अंक), डॉ. शशि भारद्वाज, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली
जनसंचार : विविध आयाम – ब्रजमोहन गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।
जनमाध्यम सम्प्रेषण और विकास – देवेन्द्र इस्सर, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली ।
जनसंचार माध्यमों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य – जवरीमल्ल पारख, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली ।
संस्कृति विकास और संचार क्रान्ति – पूरनचंद्र जोशी, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली ।
जनमाध्यम और मास कल्चर – जगदीश्वर चतुर्वेदी, सारांश प्रकाशन, नई दिल्ली ।
जनसंचार इक्कीसवीं सदी – (सं.) कुमार आदर्श वर्मा, भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली।
संचार माध्यम (पत्रिका) – भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली ।
सूचना क्रान्ति की राजनीति और विचारधारा – सुभाष धूलिया, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली ।
जनसंचार माध्यम : चुनौतियाँ और दायित्व – डॉ. त्रिभुवन राय, युनिवर्सिटी बुक हाउस, जयपुर ।
हिंदी भाषा का समाजशास्त्र – डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।
हिंदी का सामाजिक संदर्भ – डॉ. रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव एवं डॉ. रमानाथ सहाय, केन्द्रीय हिंदी संस्थान।
हिंदी भाषा की सामाजिक संरचना – (सं.) डॉ. भोलानाथ तिवारी एवं डॉ. मुकुल प्रियदर्शिनी, साहित्य सहकार, दिल्ली ।
नागरी लिपि और हिंदी–वर्तनी – डॉ. अनन्त चौधरी, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली।
भाषाशिल्प : विविध आयाम – डॉ. कुसुम अग्रवाल, अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली ।
कोश विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी, शब्दकार प्रकाशन, नई दिल्ली ।
कोश निर्माण : सिद्धान्त और परम्परा – डॉ. सुरेश कुमार, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ।
कोश विज्ञान – सुधा मंगेश कत्रे, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ।
हिंदी कोश विज्ञान का उद्‌भव और विकास – डॉ. युगेश्वर, भारतीय विद्या प्रकाशन, काशी ।
कोश–विज्ञान : सिद्धान्त और प्रयोग – डॉ. हरदेव बाहरी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।
कोश विज्ञान : सिद्धान्त एवं मूल्यांकन – सं. सतीश कुमार रोहरा एवं पीताम्बर, केन्द्रीय हिंदी संस्थान
विज्ञान तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली द्वारा प्रकाशित (विभिन्न) बृहत् पारिभाषिक शब्दकोश।
संरचनात्मक शैली विज्ञान – डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, आलेख प्रकाशन, दिल्ली ।
शैली विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी, शब्दकार, दिल्ली ।
शैली और शैली विश्लेषण – डॉ. पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
शैली विज्ञान – डॉ. सुरेश कुमार, मैकमिलन, दिल्ली ।
शैली और शैली विज्ञान – सं. डॉ. सुरेश कुमार एवं डा. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, केन्द्रीय हिंदी संस्थान,
रीति विज्ञान – डॉ. विद्यानिवास मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।
गद्य संरचना : शैली वैज्ञानिक विवेचन – डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा, सुधी प्रकाशन, जयपुर ।
काव्यभाषा पर तीन निबंध – डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
राजभाषा का स्वरूप और विकास – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता ।
राजभाषा हिंदी : प्रचलन और प्रसार – डॉ. रामेश्वर प्रसाद, अनुपम प्रकाशन, पटना ।
हिंदी भाषा : अतीत से आज तक –विजय अग्रवाल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
प्रशासन में राजभाषा हिंदी – डॉ. नारायण दत्त पालीवाल, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली ।

प्रशासनिक कामकाजी शब्दावली – डॉ. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली ।
आवेदनपत्र प्रारूप – शिवनारायण चतुर्वेदी, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली ।
कार्यालयी हिंदी – ठाकुर दास, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली ।
केन्द्रीय सचिवालय कार्यालय पद्धति – कार्मिक और प्रशासनिक सुधार विभाग, नई दिल्ली ।
कार्यालय कार्यबोध – हरिबाबू कंसल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ।
सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग – गोपीनाथ श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
सचिवालय नोटिंग ड्राफ्टिंग एवं प्रेस राइटिंग – जी. एल. टण्डन एवं सरन, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ ।
प्रामाणिक आलेखन और टिप्पण – विराज एम. ए., राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली ।
हिंदी पत्रकारिता – डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली ।
द राईज एण्ड ग्रोथ आफ हिंदी जर्नलिज्म – डॉ. राम रतन भटनागर, किताब महल, इलाहाबाद
समाचार पत्रों का इतिहास – अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, ज्ञानमण्डल लि., वाराणसी ।
भारतेन्दु युग और हिंदी भाषा की विकास परम्परा – डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण – डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।
पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम – डॉ. संजीव भानावत, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, जयपुर ।
हिंदी पत्रकारिता का बृहद् इतिहास – डॉ. अर्जुन तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
हिंदी पत्रकारिता के युग निर्माता – लक्ष्मीशंकर व्यास, व्यास प्रकाशन, वाराणसी ।
अखबारनामा – आलोक श्रीवास्तव, संवाद प्रकाशन, मेरठ
हिंदी पत्रकारिता के इतिहास की भूमिका – डॉ. जगदीश्वर चतुर्वेदी, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली ।
हिंदी पत्रकारिता : विविध आयाम (भाग–1 , सं. 2) – डॉ. वेदप्रताप वैदिक, हिंदी बुक सेन्टर, नई दिल्ली
बृहद् हिंदी पत्र–पत्रिका कोश : डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
अनुवाद का भाषिक सिद्धान्त – जे. सी. केटफोर्ड (अनु. डॉ. रविशंकर दीक्षित), मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
अनुवाद विज्ञान – सं. डॉ. नगेन्द्र, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।
अनुवाद : सिद्धान्त और समस्याएँ – सं. डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव तथा कृष्ण कुमार गोस्वामी, आलेख प्रकाशन, दिल्ली ।
अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा – डॉ. सुरेश कुमार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
अनुवाद विज्ञान – डॉ भोलानाथ तिवारी, शब्दकार, दिल्ली ।
अनुवाद कला – डॉ. भोलानाथ तिवारी, शब्दकार, दिल्ली ।
अनुवाद विज्ञान और सम्प्रेषण – डॉ. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली ।
पत्रकारिता में अनुवाद की समस्याएँ – डॉ. भोलानाथ तिवारी तथा जितेन्द्र गुप्त शब्दकार, दिल्ली
अनुवाद : अवधारणा और अनुप्रयोग – सं. चन्द्रभान रावत तथा डॉ. दिलीप सिंह, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद ।
अनुवाद विज्ञान – डॉ. राजमणि शर्मा, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला ।
भारतीय भाषा और हिंदी अनुवाद : समस्या समाधान – डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
अनुवाद और मशीनी अनुवाद – सं. गार्गी गुप्त तथा अन्य, भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली
अनुवाद : विविध आयाम – माणिक गोपाल चतुर्वेदी तथा कृष्ण कुमार गोस्वमी, केन्द्रीय हिंदी संस्थान
कार्यालयी अनुवाद की समस्याएँ – सं. डा. भोलानाथ तिवारी एवं अन्य , शब्दकार, दिल्ली
अनुवाद पत्रिका (अनुवाद शतक विशेषांक)– सं. नीता गुप्ता,भारतीय अनुवाद परिषद,नई दिल्ली।

जनमाध्यम और पत्रकारिता (प्रथम खण्ड) – प्रवीण दीक्षित, सहयोगी साहित्य संस्थान, कानपुर ।
फीचर लेखन – डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ, हंस प्रकाशन, जयपुर ।
फीचर लेखन : स्वरूप और शिल्प – डॉ. मनोहर प्रभाकर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।
हिंदी सिनेमा का सच – सं. मृत्युंज्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
हिंदी फिल्मों में साहित्यिक उपादान – डॉ. विश्वनाथ मिश्र, हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी ।
हिंदी इण्टरव्यू : उद्‌भव और विकास – डॉ. विष्णु पंकज, विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर ।
हिंदी समाचार बुलेटिन (भाषा के कुछ आयाम) – भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली ।
हिंदी विज्ञान पत्रकारिता – मनोज कुमार पटेरिया, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली ।
साक्षात्कार – मनोज कुमार, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल ।
भेंटवार्ता और प्रेस कान्फ्रेंस – डॉ. नन्दकिशोर त्रिखा, माखनलाल चतर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल ।
व्यावसायिक हिंदी – डॉ. एस. एम. शुक्ल, साहित्य भवन, आगरा ।
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित पाठ्य सामग्री ।
फोटो पत्रकारिता – डॉ. गुलाब कोठारी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर ।
कम्प्यूटर प्रवेशिका – अरुण कमार अग्रवाल एवं कृष्णमूर्ति, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।
कम्प्यूटर्स इन ब्रॉडकास्ट एण्ड केबिल न्यूजरूम्स – फिलिप ओ. कीरस्टीड, लारेन्स अल्बर्म एसोशिएट्स ।
सूचना तकनीक – विष्णु प्रिया सिंह, एशियन पब्लिकेशन, दिल्ली ।
आज का युग : इंटरनेट का युग – विनीता सिंघल, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली ।
कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग – विजय कुमार मल्होत्रा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
कम्प्यूटर और हिंदी – डॉ. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
आज का युग : इंटरनेट का युग – विनीता सिंघल, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली ।
कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग – विजय कुमार मल्होत्रा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली ।
भाषा शोध – प्रो. मनोज दयाल, हरियाणा साहित्य अकादमी, हरियाणा ।
सामाजिक विज्ञानों की शोध पद्धतियाँ – डॉ. सत्यदेव, हरियाणा साहित्य अकादमी, हरियाणा ।
सामाजिक सर्वेक्षण–अनुसंधान की अन्वेषण पद्धतियाँ – डॉ. सी. एल. शर्मा, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर ।
शोध : स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि – डॉ. बैजनाथ सिंहल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
सूचना प्रौद्योगिकी और पत्रकारिता – अशोक मलिक, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला ।
जनसंचार माध्यमों का सामाजिक चरित्र – जवरीमल्ल पारख, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली ।
मास कम्युनिकेशन इन इण्डिया – केवल जी. कुमार, जयको पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
सूचना समाज – जगदीश्वर चतुर्वेदी, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली ।
इलेक्ट्रानिक माध्यम – डॉ. राममोहन पाठक, पाठक प्रकाशन, वाराणसी ।
सूचना क्रान्ति की राजनीति और विचारधारा – सुभाष धूलिया, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली ।
जनसंचार माध्यमों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य – जवरीमल्ल पारख, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली ।